समकालीन हिंदी लेखिकाओं की रचनाओं में जल से जुडी सम्वेदना

डा.रंजित एम ,अद्ध्यक्ष ,हिंदी विभाग,एम.इ.एस अस्माबी कोलेज,कोटुंगलूर ९३८७४४१३००

तंदरनजात/हउंपसण्बवउ

"प्रकृति पर मनुष्य की विजय को लेकर ज्यादा खुश होने की जरूरत नहींए क्योंकि ऐसी हर जीत हमसे अपना बदला लेती है।पहली बार तो हमें वही परिणाम मिलता है जो हमने चाहा थाए लेकिन दूसरी और तीसरी दफा इसके अप्रत्याशित प्रभाव दिखाई पड़ते हैं जो पहली बार के प्रत्याशित प्रभाव का प्रायः निषेध कर देते हैं। इस तरह हर कदम पर हमें यह चेतावनी मिलती है कि हम प्रकृति पर शासन नहीं करते" डायलेक्टिक्स ऑव नेचरश पुस्तक में विज्ञान और टेक्नोलॉजी के विकास के साथ प्रकृति से बड़े पैमाने पर छेड़खानी करने की पूँजीवादी प्रवृत्ति के दुष्परिणामों के प्रति चेताते हुए फ्रेडरिक एंगेल्स के इस उक्ति से यह आलेख शुरू कर रहा हूं ।

साहित्य समय और समाज के साथ चलते हुए उन्नत भविष्य के सृजन का दूसरा नाम हैए अतः जीवन और जगत की कोई भी समस्या उसकी विषय परिधि-में आयेगा ही । पारिस्थितिकीय विमर्श प्रकृति और पर्यावरण के साथ मनुष्य के संतुलित समन्वयात्मक संबंध का नाम है । इसकी परिधि में जैविक विविधता को बचाने की जद्दोजहद के साथ प्रकृतिरूपा स्त्री की गरिमा को बचाने की संवेदनात्मक पहल भी शामिल है। पर्यावरण के जितने भी प्रकार हैं उन सब के बारे में बहस करना है तो वह उतना आसान काम नहीं है , इसलिए पर्यावरण के प्रमुख हिस्सा जल के बारे कूछ विचार ही यहाँ प्रस्तुत है ।

धरती पर जीवन के अस्तित्व को बनाये रखने के लिये जल का संरक्षण और बचाव बहुत जरूरी होता है । जल से ही फसलें लहलहाती हैंए जल से ही सब्जियाँ उगाई जाती है। जल वनस्पति एवम् प्राणियों के जीवन का आधार है उसी से हम मनुष्योंए पशुओं एवम् वृक्षों को जीवन मिलता हैद्य आषाढ़ मास से जल के अमृत बिन्दुओं का स्पर्श होता ही धरती से सीधी गंध उठने लगती हैद्य कई दिनों की धरती की प्यास बुझ जाती है ।रामचरितमानस में कविवर तुलसी दास जी ने लिखा है -

श्क्षितिए जलए पावकए गगनए समीरा।
पंच रचित अति अधम शरीरा।।श

अर्थातए हमारा शरीर पंच-तत्वों यथा क्षितिए जलए पावकए गगन तथा समीरा से मिलकर बना है। इन पंच-तत्वों में से जल सबसे महत्त्वपूर्ण है। मगर, आज कया हम इस के बारे में चिंता कर रहे है, इस पर बहुत ही गहन चिंतन करने की आवश्यकता है।

भारत में नीरए नारी और नदीए तीनों का गहरा सम्बन्ध और सम्मान थाद्य इन तीनों को हमारे ऋषिमुनियों ने पोषक माना है-द्य लेकिन आज तो नदियों तथा अन्य जलक्षेत्रों की स्थिति बेहद खराब है। नदियों से लेकर जल के दूसरे प्रमुख स्रोतों जैसे झीलए तालाब और मौसमी नदियों पर भी अतिक्रमण कर उन्हें पाटा जा रहा है । नदियों का हमारे जीवन में ठीक वही महत्व हैए जो हमारे शरीर में खून ले जाने वाली धमनियों का। यदि धमनियों में खून ठहर जाए तो मौत निश्चित है। उसी तरह नदियों का प्रवाह रुकने का मतलब है सामूहिक मृत्यु जैसे परिणाम। देश की नदियों के हालात तो यही बताते हैं कि लगभग सात राज्यों की 27 नदियों का दम तो घुट ही रहा हैए इन्हें नदी भी नहीं कहा जा सकता हमारे देश में बढ़ते प्रदूषण से नदियाँ का जीवन खतरे की और अग्रसित हो रहे है ।समकालीन हिंदी लेखिकाएं इस ज्वलंत समस्या को किस प्रकार अपने रचना में चित्रित किया है ,यही इस लेख में परख रहे है ।

जे जयश्री जी की "नेल्लूर के प्लास्टिक आदमी" ३ नामक कहानी में जल शोषण के बारे में सूचना दे रहे है .प्लास्टिक आदमी जिसको लोग पुकारते है ,सत्तर साल की है .उनकी जवानी में वह नेल्लूर गाँव में आया था .उस समय तेनार नदी में स्फटिक सा सुंदर पानी था .धीरे धीरे तेनार के तट पर स्थित वह गाँव शहर बनने लगे .तेनार की पानी दूषित होने लगी .धीरे धीरे पेड़ पौधे गायब हुए .पगडंडियों की जगह राजपथ आये .नए नए दूकान आये .सब लोग अपने अपने जगह के कचरा तेनार में डालने लगे और अंत में तेनार नाम के वास्ते

नदी बन गई .सालों बाद याकोव नामक एक पुराना किसान मच्छर बढ़ने के कारण ढूंढते ढूंढते तेनार तक पहूंछ गया .तेनार की हालत देख कर वह अस्त – प्रज्ञ रह गए .नया मीडिया और नए आविष्कारों के सहारे वह तेनार बचाव आन्दोलन शुरू करता है .शुरू में उन्हें बहुत कठिनाईयों का सामना करना पडा .ख़ास कर प्लास्टिक उपभोक्ताओं से .लेकिन अंत में वे भी मानने लगे और तेनार से सभी कचरा निक्कालकर फिर शुद्ध बनाए . और एक बार नेल्लूर को हरिताभ बनाने की कोशिश में वहां के नौ जवान भी शामिल होते है . याकोव और उनके साथ काम करने वाले लोगों के अथक परिश्रम का नतीजा यह है कि यह नदी एक बार फिर से निर्मल हो गई है । यहाँ लेखिका सहकारिता के सहारे व्यक्ति और और व्यक्तिप्रकृति के बीच संतुलित संबंध कैसे स्थापित करना है यह व्यक्त कर रही है ।

ग्रामीण भारत की औरतें पर्यावरण में हो रहे क्षरण के कारण परेशानियों का सामना कर रही हैं । पूरी दुनिया में शुद्ध जल एक समस्या बन चुके है ।मैगसेसे पुरस्कार विजेताए पानी वाले बाबाए राजेंद्र सिंह ने साफ कहा है कि अगर हालात ना बदले तो अगला विश्व युद्ध पानी के लिए होगा ।विश्व आर्थिक मंच की वैश्विक जोखिम रिपोर्ट 2016 में जल संकट को सबसे अधिक प्रभाव डालने वाले दस खतरों में तीसरा खतरा बताया गया है।

आज हम नदियों के किनारे जरूर हैंए किन्तु नदियों के करीब नहीं हैंद्य हमें इन्हें अपनी सभ्यता मानते हैंए किन्तु इनके साथ हम अपना व्यवहार मैला ढोने वाली गाड़ियोंजैसा करते हैं–द्य आज जब हम अपने आसपास की नदियों का अवलोकन करते हैं–ए तो यह मानना ही पडेगा कि हमने अपनी सभ्यता और संस्कृति को ही भुला दिया हैद्यगाँवों के विकास मे जल स्त्रोत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं तथा गावों के चारों ओर बाग बगीचे पाये जाते हैं । यद्यपि समय के परिवर्तन के साथ गावों की मूल संरचना में भी परिवर्तन हुए हैं किन्तु हमारी मूल संस्कृति को आज भी गाँव ही संजोये हुए हैं ।

इस बड़ी समस्या को अकेले या सामूहिक रूप में हमें ठीक करना है । क्योंकि भारतीय सभ्यता और संस्कृति में नदियों का खासा महत्त्व रहा हैद्य हाल ही में पंजाब के संत श्री बलबीर सिंह सींचेवाल जी ने नदी को नयी ज़िन्दगी प्रदान दी है ।नदियों की रक्षा अपने बच्चों की रक्षा करने जैसी है। हम सबको स्वस्थ रहने के लिएए हमारी नदियों का स्वस्थ रहना बहुत जरूरी है।नदी किनारे रहने वाला समाज केए जन्म से मरण तकए जो भी संस्कार होते थेए उससे संस्कृति का निर्माण होता थाद्य जीवनदायिनी नदियों की रक्षा के लिए अब भी हम नहीं चेते तो हमारे जीवन पर संकट पैदा हो जाएगा। मीना अग्रवाल जी की "नारी और नदी" कविता की पंक्तियाँ यहाँ मुझे याद आ रहे है ,

"नदी नाम है निरंतरता का
नदी नाम है एकरूपता का
नदी ही नाम है समरूपता का
नदी कल्याणी है मानवता की
वह तो संवाहक है नवीनता की
आओ हम भी सीखें नदी से
कर्मपथ पर गतिशील रहना" (नारी और नदी ,मीना अग्रवाल, भारतीय काव्य का विश्व कोश)

मानव सभ्यता और संस्कृति का विकास नदियों के किनारे हुआ हैए यह सर्वज्ञात तथ्य है। इंसान और नदी का रिश्ता मां और बच्चे की तरह है।भारत इस मामले में भी अनूठा है। हमने नदियों को मां ही नहीं देवी का दर्जा दिया। हमारे पुरखों ने ऐसी परम्पराएं इसलिए बनाये थे कि प्रकृति के प्रति हमारे मन में श्रद्धा हो ।पुरखों की बनाई धार्मिक परंपराओं को हमने खूब निभाया और प्रकृति की रक्षा की उपेक्षा करते रहे। आज नियम से नदियों की आरती होती हैए उनकी पौराणिक कथाएं सुनाई जाती हैंए नदियों से जुड़े तमाम कर्मकांडों को पूरा किया जाता है और बताया जाता है कि यह सब मानवता का उद्धार करने के लिए है।आज हम नदियों के किनारे जरूर हैंए किन्तु नदियों के करीब नहीं हैंद्यइस विषय के बारे में क्षमा शर्मा जी अपनी कहानी में चर्चा कर रही है ।

क्षमा शर्मा जी की " जमुना जी तक " नामक कहानी में बढ़ रहे शहरीकरण और उसके कारण गावों में होनेवाले सांस्कृतिक ,पारिवारिक क्षेत्रों में होनेवाले परिवर्तन पर्यावरण के माध्यम से चित्रित किया है .शहर से पांच साल पहले अपने एक जमुना नदी के किनारे पर स्थित अपनी चाची के यहाँ आने की स्मृति से कहानी शुरू होती है .पांच साल पहले जो गाँव वहां था

,वह बिलकुल नहीं रह गया है .पेड़ – पौधे,नदी सब बदल गए है.प्रकृति से जुड़ कर जीनेवाले लोग अब घर के चार दीवारों के अंदर दूरदर्शन के सामने बैठ कर जीने लगे है . जमुना नदी तो कचरों से बाहरी हुयी है .किसी भी काम के लिए एक साथ आनेवाले अब अलग अलग हो चुके है .लेखिका को देख कर चाची खुश हो जाती है और वापसे जाते वक्त वह उनकी पैरों पर पड़ रही है .उसकी एक ही कामना थी ,

" मर जाऊं तो जा चोले ए जमनाजी तक पहुँचा दियो "
" हाँ ,चाची पर जमुना क्या अब वो जमुना है .गंदगी और कूड़े से भरी "
" नहीं ,बिटिया मोकूं तो वो जमना मईया है .मईया गंदी है जाये तो भूल जावतें " भारतीय धर्म और आस्था पर्यावरण पर केन्द्रितथा.उसे बदलना हमारे बस की बात नहीं है .

औद्यौगीकरण देश के विकास के लिए अति आवश्यक है लेकिन यही औद्योगीकरण बीमारियों की जड़ है और नदी प्रदूषण का मुख्य कारण भी है। देश की अधिकतर फैक्ट्रियोंए उद्योगों का कचराए रसायन सब का सब नदियों में प्रवाहित हो रहा है उसे रोकने का कोई उपाय नहीं है जहॉ हो भी सकता है वहॉ उद्योगपति अपने लाभ वृद्धि के लिए भ्रष्टाचार करके करना ही नहीं चाहते।नदियों का मानव सभ्यता के विकास में अमिट प्रभाव हैद्य इसके बिना सभ्यता और संस्कृति की कल्पना ही नहीं की जा सकती हैद्यगौरवमय परंपरा वाले देश भारत में नदियों का जनजीवन से अटूट संबंध कई रूपों में उजागर होता है। यहां सदियों से स्नान के समय पांच नदियों के नामों का उच्चारण तथा जल की महिमा का बखान एक भारतीय परंपरा बन गई है।

हिंदी के महिला लेखिकाएं अपनी रचनाओं के ज़रिये यह दिखा रही है कि , पर्यावरण-प्रदूषण मानव और जीवधारियों के लिए भंयकर चुनौती हैद्य मनुष्य अपने बुद्धिचातुर्य और दूरदृष्टि से – प्रगति के रथ को गतिशील बनाये हुए हैं द्य पर्यावरण की सुरक्षा व उसके खतरों का जब उल्लेख होता है तो उससे संबंधित सभी पहलुओ को देखना उचित है। रोग पता होने पर ही समाधान हो सकता है। समाधान तभी होगा जब हममें रोग को रोग कहने व उसका उपचार करने की दृढ़ इच्छा शक्ति होगी। कोई भी कार्य असम्भव नहीं होता। असम्भव वहीं होता है जहां इच्छा शक्ति कमजोर होती है।

कहानी के साथ साथ कविताओं में भी जल से जुड़ी समस्याओं का चित्रण महिला रचनकार अच्छी ढंग से कर रहे है ।अनुपमा जी की कविता "पानी की आत्मकथा " की पंक्तियाँ देखिये ,

"मेरा कोई आकार नहीं
कोई रूप साकार नहीं ...

शिव की जटाओं से जन्मा
तपस्या का मोलएगंगा नाम मिला
पावन हूँ ये कहते हैं
पाप मुझी में धुलते हैं
बहताबहता रंगत मे हुआ काला–
अब पहचान मेरी गन्दा नाला
सुन लो बात रहस्य की कहता हूँ
भले काले में मिल सब होता काला
किन्तु समा लेता हर रंग कोएसिर्फ रंग काला
न जाने क्यूँ नाक मूँद कर गुज़रते
लोग मुँह से पिचकारी मारते "
जल धारा जब अपने उदग्म से निकलती हैए उस समय वह अत्यन्त निर्मल व प्रवाह शाली होती हैपरन्तु .. हम जैसे संवेदना हीन लोगों की बस्ती में पहुंच कर यह निर्मल धारा भी मलिन व प्रवाहहीन हो जाती है।

"एक नदी की स्मृति में" नामक कविता में कवयित्री सपना जी अचानक सूख गए एक नदी के बारे में बता रही है ,देखिये

"देखा मैंने भरी पूरी एक नदी को अचानक सूखते हुए
जीवन में जैसे आ जाते हैं
कभीकभी प्रसन्नताओं के बाद घोर अवसाद के दिन–
वह छोड़ रही थी धीरेधीरे अपना किनारा–

सिकोड़ रही थी अपना जिस्म
किनारे के पत्थरों पर बने पानी के निशानों से ही
देखने वाले अनुमान कर सकते थेकभी यहाँ तक था नदी का जल ! अरे- "

निष्कर्ष

आज अनेक मनुष्य पर्यावरण के शत्रु बने हुये है। शत्रुता को छोड़कर सभी को प्रकृति को अपना मित्र बनाना चाहिये और उसके साथ मित्रता का व्यवहार करना चाहियेए इसी में सबकी भलाई है। मानव जाति के पोषण और विकास के लिए आवश्यकता इस बात की है कि पर्यावरण पर बढते संकट पर प्रत्येक नागरिक को गंभीरता से चिंतन करने व जागरूक हो अपने पूरे परिवार के साथ उसकी देखभाल करने के लिए आगे आयें। प्रत्येक व्यक्ति में यह विचार आना चाहिए कि वह अपने आसपड़ौस के पर्यावरण को साफ- सुथरा रखकर पर्यावरण को संरक्षित करेंगे , तभी हमारे सुखमय जीवन को भी संरक्षित रखा जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

१. *समयांतरए फरवरी 2012*
२. रामचरित मानस
३.अमर अक्षर,जुलाई २०१६
४.हरिभूमिए 8 नवंबरए 2010
५.भारत की नदियाँ –राधाकांत भारती ,एन.बी.ती नईदिल्ली अई.एस.बी.एन 81.237.2364.4
७.मत्स्य पुराण
८.नया ज्ञानोदय ,फरवरी २०११
९.स्त्री आत्मकथा का इतिहास ,बलवंत कौर
१०.चौराहा ,जनवरी २०१५
११ .साहित्य क्रान्ति फरवरी २०१४
१२.सामयिक सरस्वती ,जुलाई २०१५
१३.अभिनव इमरोज़ ,मई २०१५
१४.हिन्दू युग्म ,मार्च २००७